



प्रेमचंद के 'सोज़-ए-वतन' में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और विदेशी शासन का विरोध

MD Imtiyaz

Research Scholar, Hindi Teacher, ZPHS Kothapally, Telangana, India

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12249>

सारांश

प्रेमचंद हिंदी-उर्दू साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन अथवा सौंदर्य-बोध का माध्यम न मानकर सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रभावी साधन बनाया। उनका साहित्य भारतीय समाज के उस संक्रमणकालीन दौर की अभिव्यक्ति है, जब एक ओर भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था और दूसरी ओर जनता में स्वतंत्रता, आत्मसम्मान तथा राष्ट्रीय एकता की भावना धीरे-धीरे विकसित हो रही थी। प्रेमचंद की आरंभिक रचनाओं में देशप्रेम और राष्ट्रीय जागरण का जो स्वर दिखाई देता है, उसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण उनका कहानी-संग्रह 'सोज़-ए-वतन' है। इस संग्रह में देश को केवल एक भौगोलिक सीमा के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक पहचान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।^[1, 2]

'सोज़-ए-वतन' प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना के प्रारंभिक स्वरूप को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। संग्रह की कहानियों में मातृभूमि के प्रति प्रेम, देश के लिए त्याग, राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वतंत्रता की आकांक्षा तथा विदेशी शासन के प्रति असहमति जैसी भावनाएँ विभिन्न कथा-स्थितियों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई हैं। इन कहानियों में देशप्रेम केवल भाषण अथवा नारे के रूप में नहीं आता, बल्कि पात्रों के व्यक्तिगत जीवन, उनके निर्णयों, संघर्षों और बलिदान से जुड़ जाता है। इस प्रकार प्रेमचंद राष्ट्रीय विचार को मानवीय संवेदना में परिवर्तित करते हैं और पाठक के भीतर देश के प्रति भावनात्मक संबंध विकसित करने का प्रयास करते हैं।^[1, 3]

इस शोध-पत्र में 'सोज़-ए-वतन' को मुख्य पाठ के रूप में स्वीकार करते हुए उसमें व्यक्त राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और विदेशी शासन के विरोध का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि प्रेमचंद के आरंभिक राष्ट्रवाद की प्रकृति क्या थी और वह अपने समय के राजनीतिक-सामाजिक वातावरण से किस प्रकार प्रभावित था। साथ ही यह भी देखने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद की राष्ट्रीय दृष्टि आगे चलकर सामाजिक न्याय, जनजीवन और मानवतावाद से किस प्रकार जुड़ती है। इस दृष्टि से 'सोज़-ए-वतन' केवल देशभक्ति की कहानियों का संग्रह नहीं, बल्कि भारतीय समाज में विकसित हो रही राष्ट्रीय चेतना का साहित्यिक दस्तावेज भी है।^[2, 5]

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आता है कि प्रेमचंद का राष्ट्रवाद संकीर्ण अथवा केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित राष्ट्रवाद नहीं है। उसमें मातृभूमि के प्रति प्रेम के साथ-साथ सामान्य जनता की पीड़ा, सामाजिक जिम्मेदारी, आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा की चिंता भी जुड़ी हुई है। 'सोज़-ए-वतन' में जिस राष्ट्रीय भावना का प्रारंभिक रूप दिखाई देता है, वही बाद में प्रेमचंद के विस्तृत साहित्यिक संसार में अधिक व्यापक सामाजिक चेतना के रूप में विकसित होती है। इसलिए इस संग्रह को प्रेमचंद की संपूर्ण साहित्यिक और वैचारिक यात्रा की आधारभूमि के रूप में देखना अधिक उचित होगा।^[3, 6]

मूल शब्द: प्रेमचंद, सोज़-ए-वतन, राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, राष्ट्रवाद, विदेशी शासन, स्वतंत्रता, राष्ट्रीय स्वाभिमान, जनजागरण, साहित्य और समाज, त्याग, बलिदान, मानवतावाद।

भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी का आरंभिक काल राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण समय था। ब्रिटिश शासन ने भारत की राजनीतिक सत्ता पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था और इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज के सामने अनेक नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं। आर्थिक शोषण, प्रशासनिक नियंत्रण और सांस्कृतिक प्रभाव के साथ-साथ भारतीयों में अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता भी बढ़ने लगी। इसी ऐतिहासिक परिस्थिति में राष्ट्रीय आंदोलन का विकास हुआ और साहित्य ने जनता के बीच राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।^[7, 8]

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ केवल किसी राष्ट्र के अस्तित्व का बौद्धिक ज्ञान नहीं है। इसके भीतर अपने देश, समाज, संस्कृति और सामूहिक भविष्य के प्रति आत्मीयता तथा जिम्मेदारी की भावना भी शामिल होती है। औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास एक जटिल प्रक्रिया थी क्योंकि भारतीय समाज भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र और सामाजिक स्थिति की दृष्टि से अत्यंत विविध था। साहित्य ने इन विविधताओं के बीच एक व्यापक सामूहिक

पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रेमचंद इसी साहित्यिक प्रक्रिया के प्रमुख रचनाकार हैं।^[11, 12]

प्रेमचंद का साहित्य सामान्य जनता के जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने किसान, मजदूर, गरीब, स्त्री और सामाजिक रूप से वंचित लोगों को अपने साहित्य का महत्वपूर्ण पात्र बनाया। उनके लिए साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं था; साहित्य समाज की समस्याओं को पहचानने और पाठक को उनके प्रति संवेदनशील बनाने का माध्यम भी था। प्रेमचंद और भारतीय राष्ट्रवाद पर सुधीर चंद्र के अध्ययन से भी यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद लेखन को सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी से जोड़कर देखते थे।^[2]

प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना को समझने के लिए उनके जीवन और साहित्यिक विकास की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना आवश्यक है। वे हिंदी और उर्दू दोनों भाषाई परंपराओं से जुड़े हुए थे और भारतीय समाज के व्यापक जीवन को साहित्य में अभिव्यक्त करते थे। उनकी रचनाओं में राष्ट्र की अवधारणा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक जीवन और सामान्य जनता की परिस्थितियों से भी जुड़ती है। यही कारण है

कि उनके राष्ट्रवाद को सामाजिक यथार्थवाद और मानवतावाद से अलग करके देखना उचित नहीं होगा। [4, 13]

‘सोज़-ए-वतन’ इसी साहित्यिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह प्रेमचंद का आरंभिक कहानी-संग्रह था जिसमें पाँच देशभक्ति-प्रधान कहानियाँ शामिल थीं। संग्रह की कहानियों में भारतीयों के भीतर मातृभूमि के प्रति प्रेम और स्वतंत्रता की आकांक्षा को जागृत करने का प्रयास दिखाई देता है। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के डिजिटल स्रोत में भी प्रेमचंद की रचनाओं को स्वतंत्रता संघर्ष और जनता में जागरण की भावना से जोड़कर देखा गया है। [1, 9]

‘सोज़-ए-वतन’ के प्रकाशन के बाद औपनिवेशिक शासन की प्रतिक्रिया भी उल्लेखनीय है। संग्रह की सामग्री को शासन की दृष्टि से आपत्तिजनक माना गया और इसके विरुद्ध कार्रवाई की गई। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य को औपनिवेशिक सत्ता केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं मानती थी, बल्कि उसमें राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता भी देखती थी। प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन में यह घटना एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुई। [1, 2]

इस प्रकार ‘सोज़-ए-वतन’ का अध्ययन केवल पाँच कहानियों के साहित्यिक विश्लेषण तक सीमित नहीं रह सकता। इसे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, औपनिवेशिक शासन, साहित्यिक जनजागरण और प्रेमचंद की वैचारिक यात्रा के व्यापक संदर्भ में देखना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध इसी समग्र दृष्टि से ‘सोज़-ए-वतन’ में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और विदेशी शासन के विरोध का अध्ययन करता है। [3, 7]

शोध समस्या

प्रेमचंद के साहित्य पर राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद, सामाजिक यथार्थ और मानवतावाद के संदर्भ में अनेक अध्ययन किए गए हैं। फिर भी ‘सोज़-ए-वतन’ को केवल आरंभिक देशभक्ति साहित्य मानकर छोड़ देना इसके वैचारिक महत्व को सीमित कर देता है। इस संग्रह में देशप्रेम केवल भावुकता नहीं है, बल्कि वह राष्ट्रीय स्वाभिमान, त्याग, नैतिक कर्तव्य और विदेशी शासन के प्रति असहमति से जुड़ा हुआ है। इसलिए मुख्य शोध समस्या यह है कि ‘सोज़-ए-वतन’ में राष्ट्रीय चेतना किस प्रकार निर्मित होती है और उसका देशप्रेम तथा विदेशी शासन के विरोध से क्या संबंध स्थापित होता है? [1, 2]

दूसरी महत्वपूर्ण शोध समस्या प्रेमचंद के राष्ट्रवाद के स्वरूप को लेकर है। यह प्रश्न उठता है कि क्या प्रेमचंद का राष्ट्रवाद केवल अंग्रेजी शासन के विरोध तक सीमित था अथवा उसके भीतर भारतीय समाज के पुनर्निर्माण की कोई व्यापक कल्पना भी मौजूद थी। प्रेमचंद के बाद के साहित्य को देखने पर स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता की चिंता धीरे-धीरे सामाजिक न्याय, आर्थिक विषमता और सामान्य जनता की समस्याओं से जुड़ती गई। इसलिए ‘सोज़-ए-वतन’ को प्रेमचंद के संपूर्ण वैचारिक विकास की प्रारंभिक कड़ी के रूप में देखना आवश्यक है। [4, 5]

तीसरी शोध समस्या साहित्य और राजनीतिक सत्ता के संबंध से संबंधित है। ‘सोज़-ए-वतन’ के विरुद्ध औपनिवेशिक शासन की कार्रवाई यह प्रश्न उत्पन्न करती है कि साहित्य में व्यक्त देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना सत्ता के लिए किस प्रकार चुनौती बन सकती थी। यदि कहानी पाठक के भीतर स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न करती है, तो वह केवल साहित्यिक अनुभव नहीं रह जाती, बल्कि राजनीतिक चेतना का भी माध्यम बन जाती है। इस दृष्टि से ‘सोज़-ए-वतन’ साहित्य और सत्ता के संबंध का महत्वपूर्ण उदाहरण है। [9, 10]

चौथी शोध समस्या राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक चेतना के संबंध से जुड़ी है। राष्ट्र के प्रति प्रेम तब अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है जब उसमें राष्ट्र के लोगों के प्रति संवेदना भी शामिल हो। प्रेमचंद

के साहित्य में सामान्य जनता का जीवन केंद्र में है। इसलिए यह अध्ययन इस प्रश्न पर भी विचार करता है कि ‘सोज़-ए-वतन’ की राष्ट्रीय भावना किस सीमा तक जनता, सामाजिक एकता और मानवीय गरिमा से जुड़ी हुई है। [5, 14]

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का प्राथमिक उद्देश्य प्रेमचंद के ‘सोज़-ए-वतन’ में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन और विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद राष्ट्र और मातृभूमि की अवधारणा को किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं तथा उनके पात्रों और कथा-स्थितियों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना किस रूप में पाठक तक पहुँचती है। राष्ट्रीय चेतना को केवल राजनीतिक विचार के रूप में न देखकर भावनात्मक और नैतिक अनुभव के रूप में भी समझना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है। [1, 2]

शोध का दूसरा उद्देश्य ‘सोज़-ए-वतन’ में देशप्रेम की अवधारणा का विश्लेषण करना है। इसमें यह देखा गया है कि प्रेमचंद देशप्रेम को किस प्रकार त्याग, बलिदान, कर्तव्य और आत्मसम्मान से जोड़ते हैं। उनके यहाँ देश के प्रति प्रेम केवल मातृभूमि की प्रशंसा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति अपने निजी सुख और हितों का त्याग करने के लिए भी तैयार होता है। इस प्रकार देशप्रेम को सक्रिय नैतिक शक्ति के रूप में समझना इस शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। [1, 3]

तीसरा उद्देश्य ‘सोज़-ए-वतन’ में विदेशी शासन के विरोध की अभिव्यक्ति का अध्ययन करना है। इसमें यह देखा गया है कि प्रेमचंद प्रत्यक्ष राजनीतिक वक्तव्य के साथ-साथ कथा, प्रतीक, पात्रों और नैतिक संघर्षों के माध्यम से विदेशी शासन के प्रति असहमति को किस प्रकार व्यक्त करते हैं। साथ ही औपनिवेशिक सेंसरशिप और संग्रह पर हुई सरकारी कार्रवाई के संदर्भ में साहित्य की राजनीतिक शक्ति को समझना भी शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। [2, 9]

चौथा उद्देश्य प्रेमचंद के राष्ट्रवाद को व्यापक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में समझना है। राष्ट्रीय चेतना किसी एक लेखक के व्यक्तिगत विचार का परिणाम नहीं होती, बल्कि वह व्यापक ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों में विकसित होती है। इसलिए ‘सोज़-ए-वतन’ को औपनिवेशिक भारत के राजनीतिक वातावरण, राष्ट्रीय आंदोलन और साहित्यिक जनजागरण से जोड़कर देखना आवश्यक है। [7, 8]

पाँचवाँ उद्देश्य प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना और मानवतावादी दृष्टि के बीच संबंध को स्पष्ट करना है। प्रेमचंद के आगे के साहित्य में राष्ट्रवाद का विस्तार सामाजिक न्याय और सामान्य जनता की समस्याओं तक होता है। इसलिए इस शोध के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि ‘सोज़-ए-वतन’ में दिखाई देने वाला आरंभिक राष्ट्रवाद आगे चलकर किस प्रकार व्यापक सामाजिक चेतना के लिए आधारभूमि तैयार करता है। [5, 14]

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का मुख्य क्षेत्र हिंदी साहित्य और विशेष रूप से प्रेमचंद का कथा-साहित्य है। शोध का प्राथमिक पाठ ‘सोज़-ए-वतन’ है। संग्रह की कहानियों को राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, त्याग, आत्मसम्मान और विदेशी शासन के विरोध के संदर्भ में पढ़ा गया है। प्रेमचंद की अन्य रचनाओं का उपयोग केवल तुलनात्मक और संदर्भात्मक आधार पर किया गया है ताकि उनके विचारों के विकास को बेहतर ढंग से समझा जा सके। [1, 4]

शोध का दूसरा क्षेत्र भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमि है। औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय जागरण, स्वतंत्रता की आकांक्षा और साहित्यिक जनजागरण को

‘सोज़-ए-वतन’ की समझ के लिए आवश्यक संदर्भ माना गया है। इस अध्ययन में स्वतंत्रता आंदोलन का संपूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने के बजाय केवल उन ऐतिहासिक परिस्थितियों पर ध्यान दिया गया है जिनका संबंध प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना से है।^[7, 8] शोध का तीसरा क्षेत्र साहित्य और समाज का अंतर्संबंध है। प्रेमचंद के साहित्य में सामान्य जनता का जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए ‘सोज़-ए-वतन’ में राष्ट्र की अवधारणा को केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी देखा गया है। साहित्य किस प्रकार जनता की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है और जनजागरण में योगदान देता है, यह भी अध्ययन के क्षेत्र में शामिल है।^[2, 6]

शोध का चौथा क्षेत्र राष्ट्रवाद और मानवतावाद का संबंध है। प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना को संकीर्ण धार्मिक या सांप्रदायिक दृष्टिकोण से अलग रखते हुए व्यापक भारतीयता के संदर्भ में समझा गया है। हिंदी और उर्दू दोनों साहित्यिक संसार से उनके संबंध तथा भारतीय समाज की विविधता को ध्यान में रखते हुए उनके राष्ट्रवाद की व्यापकता को रेखांकित किया गया है।^[13, 15] अध्ययन में साहित्यिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय दृष्टियों का समन्वय किया गया है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि ‘सोज़-ए-वतन’ एक साथ साहित्यिक कृति, ऐतिहासिक दस्तावेज और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का माध्यम है। इसी बहुआयामी दृष्टिकोण के कारण शोध में पाठ-विश्लेषण के साथ-साथ प्रेमचंद संबंधी आलोचनात्मक अध्ययनों और राष्ट्रवाद संबंधी सैद्धांतिक स्रोतों का भी उपयोग किया गया है।^[3, 11, 12]

साहित्यिक समीक्षा

प्रेमचंद हिंदी-उर्दू साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जिनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना और जनजीवन का व्यापक चित्रण मिलता है। उनके साहित्य पर हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में पर्याप्त आलोचनात्मक कार्य हुआ है। प्रेमचंद के आरंभिक लेखन को समझने के लिए उनके साहित्यिक विकास के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। विशेष रूप से सोज़-ए-वतन को केवल पाँच देशभक्ति-कथाओं के संग्रह के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इसमें साहित्य के माध्यम से जनता में देश के प्रति प्रेम, आत्मसम्मान और विदेशी शासन के प्रति असंतोष उत्पन्न करने का प्रयास दिखाई देता है। प्रेमचंद के साहित्य पर उपलब्ध आलोचना यह संकेत देती है कि उनके लिए साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि समाज के नैतिक और बौद्धिक जागरण का माध्यम भी था।^[2, 4, 5]

सुधीर चंद्र ने प्रेमचंद और भारतीय राष्ट्रवाद के संबंध पर विचार करते हुए यह स्पष्ट किया है कि प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना किसी संकीर्ण राजनीतिक विचार तक सीमित नहीं थी। विदेशी शासन की परिस्थितियों में लेखक की सामाजिक जिम्मेदारी जनता को जागरूक करने और उसके भीतर परिवर्तन की आकांक्षा पैदा करने से जुड़ जाती है। प्रेमचंद की रचनात्मक दृष्टि में साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का संबंध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे साहित्य को जीवन से अलग करके नहीं देखते थे। सोज़-ए-वतन के संदर्भ में यह दृष्टि विशेष महत्व रखती है, क्योंकि इसकी कथाओं में देश के लिए त्याग, साहस और कर्तव्य जैसे मूल्यों को कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।^[2]

शैलेंद्र कुमार सिंह ने प्रेमचंद, राष्ट्रवाद और औपनिवेशिक उत्तर भारत में नागरिक प्रतिरोध के संबंध पर चर्चा करते हुए प्रेमचंद के राष्ट्रवादी लेखन की जटिलता को सामने रखा है। उनके अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि प्रेमचंद के यहाँ राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग नहीं है, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक चेतना से भी जुड़ी हुई है। इस दृष्टि

से सोज़-ए-वतन में देशप्रेम का अर्थ केवल देश की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ का त्याग करके देश और समाज के व्यापक हित को प्राथमिकता देना है।^[3]

अमृत राय का प्रेमचंद के जीवन और समय पर किया गया अध्ययन उनके साहित्य को ऐतिहासिक संदर्भ में समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है। प्रेमचंद के जीवनकाल में भारत राजनीतिक दासता, सामाजिक विषमता और आर्थिक शोषण की परिस्थितियों से गुजर रहा था। इसलिए उनकी आरंभिक कहानियों में राष्ट्र और जनता के प्रश्नों का उभरना स्वाभाविक था। सोज़-ए-वतन पर सरकारी कार्रवाई ने यह भी स्पष्ट किया कि तत्कालीन शासन साहित्य की राजनीतिक शक्ति को समझता था। इस संग्रह के प्रकाशन और उसके बाद हुई कार्रवाई ने प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन को प्रभावित किया और उनके लेखन की दिशा को अधिक स्पष्ट रूप से सामाजिक तथा राष्ट्रीय सरोकारों की ओर विकसित किया।^[4, 9]

रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद के साहित्य को उनके युगीन सामाजिक और राजनीतिक परिवेश से जोड़कर देखने पर बल दिया है। उनके अनुसार प्रेमचंद का यथार्थवाद केवल गरीबी, किसान और सामाजिक विषमता का चित्रण नहीं करता, बल्कि उसके पीछे मौजूद सामाजिक संरचनाओं और सत्ता-संबंधों को भी समझने का प्रयास करता है। इस दृष्टि से सोज़-ए-वतन प्रेमचंद के साहित्यिक विकास का प्रारंभिक लेकिन महत्वपूर्ण चरण है। इसमें राष्ट्रीय चेतना भावनात्मक स्तर पर दिखाई देती है, जबकि आगे चलकर उनके साहित्य में वही चेतना सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और मानवीय गरिमा के प्रश्नों से जुड़ती हुई दिखाई देती है।^[14]

फ्रांसेस्का ओरसिनी के हिंदी सार्वजनिक क्षेत्र संबंधी अध्ययन से प्रेमचंद की भाषा और साहित्य की सामाजिक भूमिका को समझने में सहायता मिलती है। हिंदी साहित्य का विकास केवल साहित्यिक गतिविधि नहीं था, बल्कि वह व्यापक सार्वजनिक संवाद का भी हिस्सा था। पत्र-पत्रिकाओं, कहानियों, उपन्यासों और निबंधों के माध्यम से राष्ट्रीय तथा सामाजिक प्रश्नों पर विचार किया जा रहा था। प्रेमचंद इसी व्यापक साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण रचनाकार थे। सोज़-ए-वतन की भाषा में हिंदी-उर्दू की साझा सांस्कृतिक परंपरा दिखाई देती है, जिससे इसका देशप्रेम किसी एक धार्मिक या सामुदायिक पहचान तक सीमित नहीं रहता।^[12]

राष्ट्रवाद के सैद्धांतिक अध्ययन में बेनेडिक्ट एंडरसन और पार्थ चटर्जी के विचार भी प्रेमचंद के राष्ट्रवादी साहित्य को समझने में उपयोगी हैं। एंडरसन राष्ट्र को एक कल्पित समुदाय के रूप में समझते हैं, जबकि चटर्जी औपनिवेशिक परिस्थितियों में राष्ट्रवादी विचारों के निर्माण की जटिलता पर विचार करते हैं। भारतीय संदर्भ में राष्ट्र की कल्पना केवल राजनीतिक सीमा या शासन-व्यवस्था से नहीं बनती, बल्कि भाषा, संस्कृति, स्मृति, साझा अनुभव और सामूहिक भावनाओं से भी निर्मित होती है। सोज़-ए-वतन में देश को इसी प्रकार एक भावनात्मक और नैतिक समुदाय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें व्यक्ति स्वयं को राष्ट्र के व्यापक अस्तित्व से जोड़ता है।^[15, 16]

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के राष्ट्रवाद, सामाजिक दृष्टि, भाषा और यथार्थवाद पर पर्याप्त आलोचनात्मक सामग्री उपलब्ध है। फिर भी सोज़-ए-वतन को विशेष रूप से राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और विदेशी शासन के विरोधकृति तीनों को एक साथ केंद्र में रखकर सरल और समन्वित ढंग से पढ़ने की आवश्यकता बनी रहती है। अधिकांश आलोचनाएँ प्रेमचंद के व्यापक साहित्य, उनके राष्ट्रवाद या उनके जीवन-संदर्भों पर केंद्रित हैं। प्रस्तुत शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करता है और सोज़-ए-वतन की कथाओं के भीतर मौजूद देश, जनता,

त्याग, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और विदेशी शासन के प्रति असहमति को एक समग्र दृष्टि से समझने का प्रयास करता है। [2, 3, 12, 14]

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध के लिए मुख्य रूप से गुणात्मक, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और ऐतिहासिक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। चूंकि विषय साहित्यिक कृतियों में व्यक्त विचारों, भावनाओं, प्रतीकों, पात्रों और सामाजिक संदर्भों के अध्ययन से संबंधित है, इसलिए मात्रात्मक पद्धति इसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। शोध का प्राथमिक आधार प्रेमचंद का सोज़-ए-वतन है, जबकि द्वितीयक आधार प्रेमचंद के जीवन, उनके साहित्य, भारतीय राष्ट्रवाद, हिंदी सार्वजनिक क्षेत्र और औपनिवेशिक भारत के इतिहास से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ तथा शोध-लेख हैं। [1, 2, 4]

ऐतिहासिक पद्धति के अंतर्गत सोज़-ए-वतन को बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक औपनिवेशिक भारत की परिस्थितियों में रखकर देखा गया है। उस समय भारत में राजनीतिक असंतोष, राष्ट्रीय आंदोलन का विकास, विदेशी शासन की नीतियों और भारतीय समाज में स्वतंत्रता की भावना के प्रसार की प्रक्रिया चल रही थी। इसलिए कहानी में प्रयुक्त देश, मातृभूमि, बलिदान और स्वतंत्रता जैसे शब्दों को उनके तत्कालीन ऐतिहासिक संदर्भ के साथ समझना आवश्यक है। इस पद्धति के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद ने अपने समय की राजनीतिक चेतना को कथा-साहित्य में किस प्रकार रूपांतरित किया। [7, 8, 9]

विश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत सोज़-ए-वतन की कथाओं के कथानक, पात्रों, संवादों, घटनाओं और विचारों का अध्ययन किया गया है। विशेष ध्यान उन प्रसंगों पर दिया गया है जहाँ व्यक्ति और राष्ट्र के संबंध, व्यक्तिगत सुख और राष्ट्रीय कर्तव्य, जीवन और बलिदान तथा देशप्रेम और विदेशी शासन के बीच संघर्ष दिखाई देता है। इसके साथ ही कहानी की भाषा और शैली को भी विश्लेषण का आधार बनाया गया है, क्योंकि प्रेमचंद ने सरल और प्रभावशाली भाषा के माध्यम से गंभीर राष्ट्रीय विचारों को सामान्य पाठक तक पहुँचाने का प्रयास किया। [1, 5]

व्याख्यात्मक पद्धति के अंतर्गत यह देखा गया है कि सोज़-ए-वतन में देशप्रेम को किस प्रकार नैतिक मूल्य के रूप में स्थापित किया गया है। यहाँ देश के प्रति प्रेम केवल भावुकता नहीं है, बल्कि कर्तव्य, साहस, त्याग और आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है। पात्रों की परिस्थितियों और उनके निर्णयों के माध्यम से पाठक को यह समझाने का प्रयास किया जाता है कि राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी व्यक्तिगत स्वार्थ से बड़ी हो सकती है। इस दृष्टि से कथा-साहित्य पाठक के भीतर केवल भावना पैदा नहीं करता, बल्कि उसके विचारों को भी प्रभावित करता है। [2, 3]

तुलनात्मक संदर्भ-पद्धति का सीमित उपयोग भी किया गया है। सोज़-ए-वतन में दिखाई देने वाली प्रारंभिक राष्ट्रीय चेतना की तुलना प्रेमचंद की बाद की रचनाओं में विकसित सामाजिक चेतना से की गई है। कर्मभूमि और गोदान जैसी रचनाओं के संदर्भ से यह समझने में सहायता मिलती है कि प्रेमचंद की राष्ट्रीय दृष्टि समय के साथ अधिक व्यापक होकर किसान, श्रमिक, गरीब, स्त्री और वंचित वर्गों के प्रश्नों से जुड़ती गई। इस प्रकार सोज़-ए-वतन को प्रेमचंद के समग्र साहित्यिक विकास की आरंभिक कड़ी के रूप में समझा गया है। [17, 18]

शोध विश्लेषण

सोज़-ए-वतन शीर्षक अपने आप में अत्यंत अर्थपूर्ण है। 'सोज़' का अर्थ पीड़ा, वेदना या जलन से और 'वतन' का अर्थ मातृभूमि या देश से संबंधित है। इस प्रकार शीर्षक में ही मातृभूमि की

पीड़ा और उसके प्रति गहरी भावनात्मक संवेदना का संकेत मिलता है। यह केवल देश की प्रशंसा करने वाला शीर्षक नहीं है, बल्कि ऐसी मातृभूमि की ओर संकेत करता है जो विदेशी शासन के कारण पीड़ा में है। शीर्षक और कथाओं के अंतर्संबंध से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद देश को एक जीवंत भावनात्मक सत्ता के रूप में देखते हैं और उसके दुख को अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। [1, 4]

सोज़-ए-वतन की सबसे चर्चित कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' है। इस कहानी में देश के लिए बलिदान को अत्यंत ऊँचे मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कहानी का केंद्रीय विचार यह है कि संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु भौतिक संपत्ति नहीं, बल्कि देश के लिए दिया गया जीवन और बलिदान है। प्रेमचंद ने इस विचार को किसी राजनीतिक भाषण के रूप में नहीं, बल्कि कथा और भावनात्मक प्रसंग के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार कहानी पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि व्यक्ति का जीवन तब अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है जब वह अपने निजी अस्तित्व से आगे बढ़कर देश और समाज के लिए समर्पित होता है। [1, 9]

'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' की विशेषता यह है कि इसमें देशप्रेम को अमूर्त विचार न रखकर बलिदान की ठोस अनुभूति से जोड़ा गया है। कहानी में देश के लिए बहाए गए रक्त की अंतिम बूंद को अनमोल रतन के रूप में देखने की कल्पना देशप्रेम को अत्यंत प्रभावशाली प्रतीक में बदल देती है। यहाँ रक्त केवल शारीरिक जीवन का संकेत नहीं है, बल्कि त्याग, साहस और राष्ट्रीय समर्पण का प्रतीक बन जाता है। भारत सरकार के सांस्कृतिक अभिलेखों में भी इस कहानी और सोज़-ए-वतन को प्रेमचंद के आरंभिक राष्ट्रवादी लेखन के महत्वपूर्ण उदाहरणों के रूप में दर्ज किया गया है। [9]

'शेख मखमूर' में भी राष्ट्रीय चेतना केवल भाषण या नारे के रूप में नहीं आती, बल्कि पात्रों के निर्णय और साहस से विकसित होती है। कहानी का पात्र अपने व्यक्तिगत जीवन और व्यापक कर्तव्य के बीच संघर्ष का अनुभव करता है। प्रेमचंद इस संघर्ष के माध्यम से यह प्रश्न उठाते हैं कि जब देश संकट में हो तो व्यक्ति का वास्तविक कर्तव्य क्या होना चाहिए। इस प्रकार व्यक्तिगत भावनाओं के ऊपर राष्ट्रीय जिम्मेदारी को स्थान देना कहानी की प्रमुख वैचारिक विशेषता बन जाता है। [1, 4]

'यही मेरा वतन है' में मातृभूमि के प्रति भावनात्मक लगाव अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। यहाँ वतन केवल भौगोलिक भूमि नहीं है, बल्कि स्मृति, पहचान और आत्मीयता से निर्मित संसार है। व्यक्ति अपने देश को इसलिए नहीं चाहता कि वह केवल उसकी जन्मभूमि है, बल्कि इसलिए भी कि उसके जीवन की स्मृतियाँ, उसके लोग, उसकी संस्कृति और उसकी सामूहिक पहचान उससे जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार कहानी में राष्ट्रीय चेतना का भावनात्मक आधार मजबूत होता है। [1, 5]

'शोक का पुरस्कार' तथा संग्रह में सम्मिलित अन्य कथाओं में त्याग और देश के लिए कष्ट सहने की भावना विभिन्न रूपों में सामने आती है। प्रेमचंद बलिदान को केवल मृत्यु से नहीं जोड़ते, बल्कि मानसिक पीड़ा, व्यक्तिगत त्याग और सामाजिक जिम्मेदारी को भी देशभक्ति का हिस्सा बनाते हैं। इस दृष्टि से देशप्रेम का अर्थ केवल युद्धभूमि में प्राण देना नहीं है; देश और समाज के लिए अपने स्वार्थ को पीछे रखना भी उसी भावना का हिस्सा है। [1, 4]

'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम' में व्यक्तिगत प्रेम और देशप्रेम के बीच दिखाई देने वाला तनाव प्रेमचंद की राष्ट्रीय दृष्टि की जटिलता को सामने लाता है। मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन उसकी भावनाओं और संबंधों से निर्मित होता है, लेकिन राष्ट्र संकट में

हो तो वही व्यक्ति व्यापक जिम्मेदारी के सामने अपने निजी हितों का पुनर्मूल्यांकन करता है। प्रेमचंद इस द्वंद्व को सरल नैतिक शिक्षा में बदलने के बजाय कथा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इससे देशप्रेम एक जीवंत मानवीय अनुभव बन जाता है।^[1, 2]

सोज़-ए-वतन में राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष आत्मसम्मान है। विदेशी शासन के अधीन जीवन केवल राजनीतिक अधीनता नहीं है; वह व्यक्ति और समाज की मानसिक स्वतंत्रता को भी प्रभावित करता है। प्रेमचंद के पात्रों में अपनी भूमि, समाज और सामूहिक अस्तित्व के प्रति सम्मान दिखाई देता है। यह आत्मसम्मान धीरे-धीरे विदेशी शासन की अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति असहमति का आधार बनता है। इसलिए देशप्रेम और विदेशी शासन का विरोध एक-दूसरे से जुड़े हुए विचार बन जाते हैं।^[2, 3]

प्रेमचंद के यहाँ विदेशी शासन का विरोध हिंसक राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत नहीं होता। उनकी कहानियों में इसका स्वर मुख्यतः नैतिक, भावनात्मक और वैचारिक है। वे पाठक के भीतर यह भावना उत्पन्न करना चाहते हैं कि अपना देश अपने लोगों का है और उसके प्रति जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की है। विदेशी सत्ता की आलोचना के साथ-साथ वे भारतीय समाज के भीतर साहस, एकता, आत्मविश्वास और त्याग जैसे गुणों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। इस प्रकार विरोध का स्वर जनता की चेतना को जागृत करने के माध्यम से निर्मित होता है।^[2, 3, 7]

सोज़-ए-वतन की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक यह है कि प्रेमचंद ने राष्ट्रीय भावना को सामान्य जनता की भाषा में प्रस्तुत किया। कठिन राजनीतिक सिद्धांतों के स्थान पर उन्होंने कहानी, पात्र और भावनात्मक प्रसंगों का सहारा लिया। इससे देशप्रेम का विचार शिक्षित अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामान्य पाठक के अनुभव से जुड़ जाता है। साहित्य का यही जनसुलभ रूप प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना को व्यापक सामाजिक प्रभाव प्रदान करता है।^[5, 12]

भाषा की दृष्टि से भी सोज़-ए-वतन महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद का आरंभिक साहित्य हिंदी-उर्दू की साझा भाषिक और सांस्कृतिक परंपरा से विकसित हुआ। 'वतन', 'सोज़' और 'हुब्ब-ए-वतन' जैसे शब्द उस समय की गंगा-जमुनी भाषिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के लिए राष्ट्र की अवधारणा किसी एक भाषा, धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं थी। उनका देशप्रेम साझा संस्कृति और सामूहिक जीवन की भावना पर आधारित था।^[12, 19]

सोज़-ए-वतन का प्रकाशन और उसके बाद ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया स्वयं इस संग्रह की राजनीतिक शक्ति को प्रमाणित करती है। भारत सरकार के सांस्कृतिक अभिलेखों के अनुसार संग्रह की कहानियों को शासन के लिए आपत्तिजनक माना गया और इसके कारण प्रेमचंद को प्रशासनिक कार्रवाई का सामना करना पड़ा। यह घटना बताती है कि उस समय साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं माना जाता था; शासन यह समझता था कि साहित्य जनता के विचारों और भावनाओं को प्रभावित कर सकता है।^[9]

सोज़-ए-वतन पर हुई सरकारी कार्रवाई प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन में एक निर्णायक घटना के रूप में देखी जाती है। संग्रह की प्रतियों को प्रशासन द्वारा जब्त किया गया और नष्ट किया गया तथा लेखक को शासन के सामने स्पष्टीकरण देना पड़ा। इस घटना के बाद प्रेमचंद ने अपने लेखन की शक्ति और उसके राजनीतिक प्रभाव को और अधिक स्पष्ट रूप से अनुभव किया। इसलिए सोज़-ए-वतन केवल साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि औपनिवेशिक भारत में साहित्य और सत्ता के बीच संबंध का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज है।^[4, 9]

प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना को उनके व्यापक साहित्यिक विकास के संदर्भ में देखने पर इसकी दिशा और स्पष्ट होती है। आरंभिक दौर में देश की स्वतंत्रता और विदेशी शासन से मुक्ति का विचार प्रमुख दिखाई देता है। आगे चलकर यही चेतना किसान, मजदूर, गरीब, स्त्री और शोषित वर्गों के जीवन से जुड़ती है। कर्मभूमि में राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष अधिक प्रत्यक्ष रूप में सामने आता है, जबकि गोदान में राष्ट्रीय प्रश्नों के साथ ग्रामीण जीवन और आर्थिक शोषण का यथार्थ प्रमुख हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का नाम नहीं था, बल्कि न्यायपूर्ण समाज की स्थापना से भी जुड़ा हुआ था।^[17, 18]

इस प्रकार सोज़-ए-वतन में राष्ट्रीय चेतना तीन परस्पर जुड़े स्तरों पर विकसित होती दिखाई देती है—कृपहला, मातृभूमि के प्रति भावनात्मक प्रेम; दूसरा, देश के लिए व्यक्तिगत त्याग और कर्तव्य; और तीसरा, विदेशी शासन के कारण उत्पन्न असंतोष तथा उससे मुक्ति की आकांक्षा। इन तीनों स्तरों के बीच गहरा संबंध है। देशप्रेम व्यक्ति को त्याग के लिए प्रेरित करता है, त्याग राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करता है और वही चेतना विदेशी शासन की अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति असहमति पैदा करती है।^[1, 2, 3]

अंततः सोज़-ए-वतन को प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीय जागरण की आरंभिक और महत्वपूर्ण कड़ी माना जा सकता है। इसकी कथाएँ पाठक को सीधे राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने का निर्देश देने के बजाय उसके भीतर देश के प्रति संवेदना, आत्मसम्मान, साहस और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करती हैं। यही इसकी साहित्यिक शक्ति है। प्रेमचंद ने कथा को ऐसा माध्यम बनाया जिसमें मनोरंजन के साथ विचार, भाव के साथ कर्तव्य और व्यक्ति के साथ राष्ट्र का संबंध स्थापित होता है। इस अर्थ में सोज़-ए-वतन हिंदी साहित्य में देशप्रेम और विदेशी शासन के विरोध की प्रारंभिक प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।^[2, 3, 9]

शोध चर्चा

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के सोज़-ए-वतन में राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की इच्छा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के नैतिक विकास, सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक आत्मसम्मान से जुड़ी हुई है। प्रेमचंद ने अपने पात्रों के माध्यम से यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि देश के प्रति प्रेम तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति के आचरण और निर्णयों में दिखाई दे। इस दृष्टि से देशप्रेम भावुक अनुभूति होने के साथ-साथ एक नैतिक दायित्व भी बन जाता है। यह विशेषता प्रेमचंद के राष्ट्रवादी साहित्य को केवल राजनीतिक प्रचार से अलग करती है।^[1, 2, 3]

प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना को उनके समय के भारतीय समाज और स्वतंत्रता आंदोलन की परिस्थितियों से अलग करके नहीं देखा जा सकता। विदेशी शासन के कारण भारतीय समाज राजनीतिक और आर्थिक रूप से अनेक प्रकार के दबावों का सामना कर रहा था। ऐसे समय में साहित्य जनता के बीच राष्ट्रीय भावना विकसित करने का प्रभावी माध्यम बन सकता था। प्रेमचंद ने इसी साहित्यिक शक्ति का उपयोग किया। सोज़-ए-वतन की कहानियों में देश को केवल एक भौगोलिक क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि लोगों की सामूहिक पहचान, स्मृति और सम्मान से जुड़े हुए जीवन-मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।^[7, 8, 12]

शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद का देशप्रेम किसी संकीर्ण धार्मिक या सामुदायिक विचार पर आधारित नहीं है। उनकी राष्ट्रीय कल्पना में विभिन्न समुदायों और भाषाई परंपराओं के लोगों के लिए स्थान है। सोज़-ए-वतन की भाषा और भावभूमि हिंदी-उर्दू की साझा सांस्कृतिक विरासत को सामने

लाती है। इसलिए प्रेमचंद का राष्ट्रवाद विभाजनकारी न होकर समावेशी स्वरूप ग्रहण करता है। यह विशेषता आज भी उनके साहित्य को प्रासंगिक बनाती है, क्योंकि राष्ट्र की अवधारणा को वे साझा जीवन, पारस्परिक सम्मान और सामूहिक जिम्मेदारी के आधार पर देखते हैं।^[12, 19]

देशप्रेम और बलिदान का संबंध सोज़-ए-वतन की प्रमुख विशेषताओं में है। प्रेमचंद के पात्रों के सामने जब व्यक्तिगत सुख और देश के व्यापक हित के बीच चुनाव की स्थिति आती है, तो देश के हित को अधिक महत्व दिया जाता है। यह त्याग केवल युद्ध या मृत्यु तक सीमित नहीं है; इसमें व्यक्तिगत इच्छाओं, सुविधाओं और स्वार्थों को पीछे रखने की भावना भी शामिल है। इस प्रकार प्रेमचंद देशभक्ति को दैनिक जीवन की नैतिक जिम्मेदारी से जोड़ते हैं।^[1, 4]

विदेशी शासन का विरोध भी इसी राष्ट्रीय चेतना का स्वाभाविक विस्तार है। प्रेमचंद ने शासन-विरोध को केवल राजनीतिक नारे के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि व्यक्ति के आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व से जोड़ा। विदेशी शासन के अधीन रहने की स्थिति में व्यक्ति के भीतर अपनी स्वतंत्र पहचान और अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना आवश्यक था। सोज़-ए-वतन की कहानियाँ इसी मानसिक जागरण को साहित्यिक रूप देती हैं।^[2, 3]

प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीयता और सामाजिक न्याय के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है। उनके लिए स्वतंत्र भारत का सपना केवल विदेशी शासन के अंत तक सीमित नहीं था। वे ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें सामान्य व्यक्ति को सम्मान, अवसर और न्याय प्राप्त हो। यही कारण है कि उनके बाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना किसान, मजदूर, स्त्री और गरीब वर्गों के प्रश्नों के साथ अधिक व्यापक रूप में जुड़ती है। सोज़-ए-वतन में जिस राष्ट्रीय भावना का आरंभिक रूप दिखाई देता है, वह आगे चलकर अधिक व्यापक सामाजिक मानवतावाद में विकसित होती है।^[14, 17, 18]

पूर्ववर्ती आलोचकों के विचारों की तुलना प्रस्तुत अध्ययन से करने पर पर्याप्त समानता दिखाई देती है। सुधीर चंद्र ने प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीय जिम्मेदारी और सामाजिक उद्देश्य की ओर संकेत किया है, जबकि शैलेंद्र कुमार सिंह ने राष्ट्रवाद और प्रतिरोध की नैतिक प्रकृति पर बल दिया है। वर्तमान अध्ययन इन दोनों दृष्टियों को सोज़-ए-वतन की विशिष्ट कथाओं के साथ जोड़कर देखता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध यह स्थापित करता है कि प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना साहित्यिक सौंदर्य और सामाजिक उद्देश्य के बीच संतुलन स्थापित करती है।^[2, 3]

सोज़-ए-वतन के प्रकाशन के बाद शासन द्वारा की गई कार्रवाई इस चर्चा को एक ऐतिहासिक आधार भी प्रदान करती है। यदि साहित्य में व्यक्त विचारों का कोई सामाजिक प्रभाव न होता, तो औपनिवेशिक शासन द्वारा ऐसी रचना पर ध्यान देना और कार्रवाई करना आवश्यक नहीं समझा जाता। संग्रह पर हुई कार्रवाई से यह प्रमाणित होता है कि साहित्य को उस समय विचारों और भावनाओं को प्रभावित करने वाली शक्ति के रूप में देखा जाता था। इस दृष्टि से सोज़-ए-वतन साहित्य और सत्ता के संबंध का भी महत्वपूर्ण उदाहरण है।^[9, 10]

प्रेमचंद के राष्ट्रवाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसका विकासशील स्वरूप है। आरंभिक रचनाओं में देश की स्वतंत्रता और विदेशी शासन से मुक्ति प्रमुख चिंता के रूप में दिखाई देती है, लेकिन आगे चलकर उनके साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा से जुड़ जाती है। इस विकास को देखते हुए सोज़-ए-वतन को प्रेमचंद के राष्ट्रवादी चिंतन का प्रारंभिक चरण कहा जा सकता है, न कि उसका पूर्ण रूप। यही कारण है कि इस संग्रह का अध्ययन प्रेमचंद के पूरे साहित्यिक विकास को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।^[2, 14]

वर्तमान समय के संदर्भ में भी सोज़-ए-वतन की प्रासंगिकता बनी हुई है। आज राष्ट्रीयता का अर्थ केवल राजनीतिक सीमाओं की रक्षा नहीं है; इसमें नागरिक जिम्मेदारी, सामाजिक एकता, समानता, मानव गरिमा और देश के प्रति सकारात्मक उत्तरदायित्व भी शामिल हैं। प्रेमचंद का साहित्य हमें यह समझने की प्रेरणा देता है कि सच्चा देशप्रेम केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदना और अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदारी भी है। इस दृष्टि से सोज़-ए-वतन का राष्ट्रीय संदेश वर्तमान समाज के लिए भी विचारणीय है।^[1, 8, 11]

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि प्रेमचंद का सोज़-ए-वतन हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की प्रारंभिक और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संग्रह की कथाओं में देश के प्रति प्रेम, मातृभूमि के लिए त्याग, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की आकांक्षा को कथा-साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय भावना को केवल राजनीतिक विचार के रूप में न रखकर उसे सामान्य मनुष्य के जीवन और भावनाओं से जोड़ दिया। इसी कारण इन कहानियों का प्रभाव केवल तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वे व्यक्ति और राष्ट्र के संबंध पर व्यापक विचार प्रस्तुत करती हैं।^[1, 2]

सोज़-ए-वतन में देशप्रेम का स्वर अत्यंत भावनात्मक होने के साथ-साथ नैतिक भी है। प्रेमचंद के पात्रों के लिए देश केवल जन्मभूमि नहीं, बल्कि उनकी पहचान, सम्मान और सामूहिक जीवन का आधार है। इसलिए देश के संकट को वे व्यक्तिगत संकट के रूप में अनुभव करते हैं। यह भावना व्यक्ति को त्याग, साहस और जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करती है। प्रेमचंद का यही दृष्टिकोण देशप्रेम को केवल शब्दों या नारों से ऊपर उठाकर जीवन-मूल्य का रूप प्रदान करता है।^[1, 4]

इस संग्रह में बलिदान की भावना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद यह स्थापित करते हैं कि किसी देश की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नेतृत्व के प्रयास से प्राप्त नहीं होती, बल्कि सामान्य लोगों के त्याग, साहस और जागरूकता से भी उसका निर्माण होता है। व्यक्ति जब अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र और समाज के हित को प्राथमिकता देता है, तभी राष्ट्रीय चेतना वास्तविक सामाजिक शक्ति में परिवर्तित होती है। दुनिया का सबसे अनमोल रतन जैसी कहानी इसी विचार को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से सामने लाती है।^[1, 9]

विदेशी शासन का विरोध सोज़-ए-वतन की केंद्रीय वैचारिक विशेषताओं में से एक है। प्रेमचंद ने विदेशी सत्ता के विरोध को केवल शासन-व्यवस्था की आलोचना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे आत्मसम्मान और स्वतंत्र चेतना से जोड़ा। उनका उद्देश्य पाठक के भीतर यह विश्वास उत्पन्न करना था कि पराधीनता स्वाभाविक या स्थायी स्थिति नहीं है और व्यक्ति तथा समाज को अपने अधिकारों तथा सम्मान के प्रति जागरूक होना चाहिए। इस प्रकार विदेशी शासन का विरोध उनके साहित्य में मानसिक और नैतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा से जुड़ जाता है।^[2, 3]

इस शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि प्रेमचंद का राष्ट्रवाद संकीर्ण या विभाजनकारी नहीं था। उनकी राष्ट्रीय चेतना में भाषा, संस्कृति और सामाजिक विविधता के लिए पर्याप्त स्थान है। हिंदी-उर्दू की साझा भाषिक परंपरा से निर्मित सोज़-ए-वतन यह संकेत देता है कि देश की कल्पना अनेक समुदायों और सांस्कृतिक अनुभवों को साथ लेकर चलती है। प्रेमचंद के लिए राष्ट्र का आधार केवल धर्म या जाति नहीं, बल्कि साझा जीवन, साझा पीड़ा और साझा भविष्य की आकांक्षा है।^[12, 19]

प्रेमचंद के साहित्य की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे सामाजिक चेतना में विकसित होती है। सोज़-ए-वतन में स्वतंत्रता और देशप्रेम का जो प्रारंभिक स्वर मिलता है, वही आगे चलकर किसान, मजदूर, गरीब, स्त्री और अन्य वंचित वर्गों की समस्याओं से जुड़ता है। कर्मभूमि और गोदान जैसी रचनाओं में राष्ट्र और समाज का प्रश्न अधिक व्यापक रूप में सामने आता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक और मानवीय स्वतंत्रता भी आवश्यक थी। [14, 17, 18]

सोज़-ए-वतन पर औपनिवेशिक शासन की कार्रवाई भी इस संग्रह के महत्व को रेखांकित करती है। संग्रह को शासन के लिए आपत्तिजनक माना जाना इस बात का प्रमाण है कि प्रेमचंद के लेखन में व्यक्ति राष्ट्रीय भावनाओं को तत्कालीन सत्ता संभावित रूप से प्रभावशाली मानती थी। इस घटना ने साहित्य और राजनीतिक सत्ता के बीच संबंध को स्पष्ट किया तथा प्रेमचंद के लेखकीय जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ उत्पन्न किया। [9, 10]

अंततः कहा जा सकता है कि सोज़-ए-वतन केवल देशभक्ति कहानियों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के निर्माण की साहित्यिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें देशप्रेम भावनात्मकता से शुरू होकर कर्तव्य, त्याग, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की आकांक्षा तक पहुँचता है। प्रेमचंद ने साहित्य को जनता के जागरण का माध्यम बनाते हुए यह संदेश दिया कि राष्ट्र का निर्माण केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन से नहीं, बल्कि जागरूक, जिम्मेदार और मानवीय नागरिकों से होता है। यही सोज़-ए-वतन की सबसे बड़ी साहित्यिक और वैचारिक उपलब्धि है। [1, 2, 3]

इस प्रकार प्रस्तुत शोध की मूल स्थापना यह है कि प्रेमचंद के सोज़-ए-वतन में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम और विदेशी शासन का विरोध तीन अलग-अलग विषय नहीं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़े हुए विचार हैं। देश के प्रति प्रेम व्यक्ति को अपने कर्तव्य का बोध कराता है; कर्तव्य की भावना त्याग और साहस को जन्म देती है; और यही चेतना विदेशी शासन की पराधीनता के प्रति असहमति तथा स्वतंत्रता की आकांक्षा को मजबूत करती है। इसलिए सोज़-ए-वतन को प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीय जागरण की एक महत्वपूर्ण आरंभिक रचना के रूप में स्थापित किया जा सकता है। [1, 2, 3]

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद। सोज़-ए-वतन। मूल कहानी-संग्रह एवं उपलब्ध पुनर्मुद्रित संस्करण।
2. चंद्र, सुधीर। "प्रेमचंद और भारतीय राष्ट्रवाद।" मॉडर्न एशियन स्टडीज़, खंड 16, अंक 4, 1982, पृष्ठ 601-621
3. सिंह, शैलेंद्र कुमार। "औपनिवेशिक उत्तर भारत में प्रेमचंद, राष्ट्रवाद और नागरिक प्रतिरोध।" द इंडियन इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू, खंड 56, अंक 2, 2019, पृष्ठ 171-194
4. राय, अमृत। प्रेमचंद: उनका जीवन और समय। दिल्ली, 1991
5. प्रेमचंद। प्रेमचंद के विचार। खंड 1, नई दिल्ली, 2003
6. प्रेमचंद। विविध प्रसंग। इलाहाबाद, 1962
7. सरकार, सुमित। आधुनिक भारत: 1885-1947। दिल्ली, 2002
8. देसाई, ए. आर। भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि। नई दिल्ली, 2014। प्रथम प्रकाशन, 1948
9. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। "प्रेमचंद का लेखन और स्वतंत्रता संग्राम।" डिजिटल डिस्ट्रिक्ट रिपॉजिटरी, आज़ादी का अमृत महोत्सव

10. बैरियर, एन. जी। प्रतिबंधित: ब्रिटिश भारत में विवादास्पद साहित्य और राजनीतिक नियंत्रण, 1907-1947। कोलंबस, 1974
11. एलोशियस, जी। भारत में राष्ट्र के बिना राष्ट्रवाद। नई दिल्ली, 1997
12. ओरसिनी, फ्रांसेस्का। हिंदी सार्वजनिक क्षेत्र, 1920-1940: राष्ट्रवाद के युग में भाषा और साहित्य। नई दिल्ली, 2002
13. पांडेय, ज्ञानेंद्र। दो दुनियाओं के बीच: प्रेमचंद की बौद्धिक जीवनी। दिल्ली, 1989
14. शर्मा, रामविलास। प्रेमचंद और उनका युग। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006। प्रथम प्रकाशन, 1952
15. एंडरसन, बेनेडिक्ट। कल्पित समुदायरु राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और प्रसार पर विचार। लंदन, 1983
16. चटर्जी, पार्थ। राष्ट्रवादी चिंतन और औपनिवेशिक विश्व: एक व्युत्पन्न विमर्श। लंदन, 1986
17. प्रेमचंद। कर्मभूमि। नई दिल्ली, 2006
18. प्रेमचंद। गोदान। नई दिल्ली, 2004
19. शिंगावी, स्नेहल। "प्रेमचंद और भाषारू अनुवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और विडंबना पर।" एनुअल ऑफ उर्दू स्टडीज़, खंड 28, 2013, पृष्ठ 149
20. अंजेरिया, उल्का। बीसवीं शताब्दी के भारतीय उपन्यास में यथार्थवाद: औपनिवेशिक भिन्नता और साहित्यिक रूप। कैम्ब्रिज, 2012